भारत लोक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एकल भागवत ज्ञानयज्ञ कार्यक्रम

---

21 सितम्बर, 2019

मुझे आज यहाँ भारत लोक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित एकल भागवत ज्ञानयज्ञ कार्यक्रम के शुभ अवसर पर उपस्थित होकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

सबसे पहले, मैं भारत लोक शिक्षा परिषद के प्रयासों और ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में इसके अमूल्य योगदान की सराहना करता हूँ। यह शहरी और ग्रामीण भारत के बीच के अन्तर को कम करने तथा इनकी असमानता को दूर करने के लिये लगातार प्रयास कर रही है।

शिक्षा चरित्र निर्माण का पहला कदम है। शिक्षा के माध्यम से बच्चों का मन श्रेष्ठता, सौन्दर्य व सत्य विचार से भरा जाना चाहिए। प्रेम सहानुभूति, पवित्रता व उच्चता का आदर्श उनके सामने प्रस्तुत हो तो वो एक कर्त्तव्यपरायण जिम्मेदार नागरिक बनेंगे।

शिक्षा विश्व में सकारात्मक परिवर्तन लाने का सबसे सशक्त माध्यम है। यदि हम समस्त भारत का विकास करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें सभी को शिक्षित करना होगा। शिक्षा समाज का दर्पण होती है, जो हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक मानदण्डों को दर्शाती और प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार न केवल गरीबी और अशिक्षा के उन्मूलन के लिये, अपितु अन्य विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्रों में लोगों के विकास के लिये भी महत्वपूर्ण है।

हमारा देश विविधताओं का देश है, यहां हर तरह की विविधता है पर फिर भी एक अदृश्य सांस्कृतिक पुल से हम सभी आपस में बंधे हुए हैं।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि परिषद देश के सुदूर और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और सशक्तीकरण से संबंधित महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान कर रही है और शारीरिक प्रशिक्षण, संस्कार तथा देशभक्ति के गीतों, कहानियों, खेल-कूद, कला एवं योग जैसे शिक्षण के विभिन्न रूचिकर माध्यमों के द्वारा बच्चों का चरित्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वर्तमान में भारतीय लोक शिक्षा परिषद् भारत के 25 राज्यों में 9434 स्वयंसेवकों, 10 क्षेत्रीय संगठनों और 8 सहायक एजेंसियों के सहयोग से अपना अभियान चला रहा है। इस संस्थान के तहत 91,035 से अधिक एकल विद्यालय में एक लाख से अधिक शिक्षकगण एवं पूर्णकालिक कार्यकर्ता पूरे समर्पण एवं सेवा भाव से ज्ञान यज्ञ में लगे हुए हैं और ये लगभग 25 लाख बच्चों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह वस्तुत: एक प्रशंसनीय उपलब्धि है।

संगठन शिक्षा ही नहीं अपितु युवाओं को सही दिशा देने का सराहनीय काम भी कर रहे हैं। मुझे जानकारी है कि पंजाब में रसायनिक उर्वरक, नशाखोरी के प्रति सचेत कर यह एकल विद्यालय लोगों में शिक्षा, संस्कार और जागरूकता के लिए प्रयत्नशील हैं।

एकल विद्यालय द्वारा चलाए गए अभियान के तहत विद्यार्थी साहसी, समर्थ, संयमी, त्यागशील, अनुशासनप्रिय, शिक्षित, स्वावलम्बी एवं स्वाभिमानी बनते हैं। सीमावर्ती इलाकों में एकल विद्यालय काफी अच्छा योगदान दे रहे हैं एवं बहुमुखी शिक्षा के साथ-साथ सामयिक समस्याओं के प्रति हमें जागरूक कर रहे हैं।

शिक्षा सब बच्चों का नैतिक अधिकार है। 2002 में 86वें संविधान संशोधन अधिनियम के अनुसार अनुच्छेद 21ए जोड़ा गया जिसमें राज्य 6 से 14 वर्ष के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क व्यवस्था करेगा। सरकार के इन्हीं प्रयासों में भारतीय लोक शिक्षा परिषद जैसी संस्थायें अपना योगदान देकर देश सेवा का कार्य कर रही हैं।

शिक्षा कोई समय के साथ बदलने वाली चीज नहीं है। प्रशिक्षण अवश्य समय के साथ बदलता है। सच बोलना चाहिए, ये हर युग में लागू है, समाज और देश के हित में कार्य करना प्रत्येक कालखंड के लिए आवश्यक है। इसलिए शिक्षा के जो मापदंड भारत के मनीषियों ने निर्धारित किए थे वो कालजयी हैं तथा वे सदा प्रासंगिक रहेंगे। इसी से प्रेरित होकर भारत लोक शिक्षा परिषद व इस दिशा में काम कर रहीं संस्थाएं निरंतर अपना कार्य कर रही हैं।

हमारे संस्कारों में, वेदों, उपनिषदों, गीता, महाभारत, रामायण इत्यादि पवित्र ग्रंथों का निचोड़ है। मुझे यकीन है कि भारतीय लोक शिक्षा परिषद् जैसी परोपकारी संस्था से जुड़े विद्यार्थी शिक्षा के उद्देश्य को केवल उत्तीर्ण हो कर पदवीं प्राप्त कर लेने तक सीमित न करते हुए, एक चरित्रवान व्यक्तित्व वाले मनुष्य बनेंगे। उनमें परहित की भावना के साथ शेर के समान साहस भी होगा। वे भविष्य में समाज व राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर एवं उपयोगी साबित होंगे।

मेरे लिए यह सम्मान और गौरव की बात है कि मुझे इस ज्ञान यज्ञ और आध्यात्मिक उत्सव में आंमत्रित किया गया है। भागदौड़ से भरी इस दुनिया में आध्यात्मिकता हमें झुलसती हुई धूप में पेड़ों की शीतल छाया की तरह शांति प्रदान करती है।

श्रीमद्भगवत गीता भारतीय धर्म, दर्शन और अध्यात्म का सार है। जो वेद ज्ञान नहीं पा सकते, दर्शन और उपनिषद् का स्वाध्याय नहीं कर सकते; भगवद्गीता उनके लिए अतुल्य सम्बल है। जीवन के उस मोड़ पर जब व्यक्ति स्वयं को द्वन्द्वों तथा चुनौतियों से घिरा हुआ पाता है और कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य के संजाल में फंस जाता है तो श्रीमद्भगवत गीता उसका हाथ थामती है और मार्गदर्शन करती है।

श्रीमद्भगवत गीता में दिए गए उपदेश जीवन का सार हैं। इन उपदेशों को सुनने वाले व्यक्ति को एक अनूठी आत्मानुभूति, एक गहन चिंतन, अद्भुत किन्तु नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

प्रवचनों एवं सत्संग के माध्यम से मनुष्य को ईश्वर की सत्ता को जानने और समझने का अवसर मिलता है। वे सहज ही उस मार्ग को प्राप्त कर लेते हैं जिससे उन्हें अपना आध्यात्मिक विकास करने के साथ ही सदाचारी और व्यावहारिक जीवन जीने में सहायता मिलती है।

इस अवसर पर मैं स्नेह, मार्गदर्शन और ज्ञानवर्धक उपदेशों के लिए भाई श्री रमेश भाई ओझा जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ। पूज्य भाई श्री रमेश भाई ओझा जी के सान्निध्य में तो भागवत कथा सुनने का अपना अलग ही आनंद है।

श्री रमेश भाई ओझा जी अपने गहन ज्ञान और सतत अनुकंपा के माध्यम से पूरे विश्व में लोगों के जीवन का उत्थान कर रहे हैं। वह सभी आयु के लोगों के लिए ज्ञान और प्रेरणा के स्रोत हैं।

शिक्षा-संस्कार और राष्ट्रभक्ति के इस महायज्ञ में शामिल होकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मेरा पूरा विश्वास है कि आपका यह भगीरथ प्रयास भावी पीढी के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहायक होगा और हमारा देश विश्वगुरू के रूप में पुन: प्रतिष्ठित होने की दिशा में आगे बढेगा।

मैं एक बार पुन: यह दोहराना चाहता हूँ कि इस पुनीत कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।